और न कोई विशेष ध्यान ही दिया। उसे कल्पना भी नहीं थी इन रहस्यमय चपातियों के अन्तःस्थल में एक छिपा हुआ तूफान है।[१]

सन् सत्तावन के प्रथम स्वतंत्रा संग्राम में मथुरा की भूमिका की एक झांकी—सन् १८५६ में मथुरा के निकट एक जंगल में देश के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी एकत्रित हुये थे।[१] यह पंचायत मथुरा के तीर्थगाह पर आयोजित हुई थी। इस पंचायत में पालकी में बिठाकर एक नवीन दर्वेश को अथवा प्रज्ञाचक्षु बिरजानन्द को लाया गया था। जब वे चौकी पर आसीनस्थ हो गये सबने उनका हार्दिक अभिनन्दन किया। मौलवी अजीमुल्ला खाँ, रंगूबाबू "रंगो बापू" और शाहन्शाह बहादुर के शहजादे ने सम्मान में अशर्फियां भेंट कीं।[२] सबने बिरजानन्द की उपस्थिति को अपना सौभाग्य समझा। विरजानन्द जी ने अपने भाषण में स्वाधीनता को स्वर्ग और दासता को नर्क बताते हुए कहा था कि अपने देश का शासन विदेशी शासन की अपेक्षा हजार गुना उत्तम है।[३] फिरंगी हमारे साथ पशुओं का सा व्यवहार करते हैं। निःसन्देह बिरजानन्द ने एकत्रित हिन्दू मुसलमान और क्रान्तिकारी नेताओं के सामने अग्निमय भाषण दिया था और देश की आजादी के लिए मर मिटने का सन्देश दिया था।[४] इन्हीं महामानव विरजानन्द के शिष्य मथुरा में विद्याध्ययन करने वाले **स्वामी दयानन्द** भी क्रान्ति की योजना से पूर्ण परिचित थे।[५] १८५६ ई० के मई मास में स्वामी दयानन्द नाना साहब के घर पहुँचे थे और ५ मास तक कानपुर और इलाहाबाद के बीच ही चक्कर काटते रहते थे।[६] इसी वर्ष जब वह कुम्भ के अवसर पर हरिद्वार गये थे वहां नाना साहब, बाला साहब, अजीमुल्ला खाँ, तात्याटोपे और जगदीशपुर के बाबू कुँवरसिंह ने उनसे भेंट कर क्रान्ति के लिए आशीर्वाद मांगा था।[७] राजा गोविन्द नाथ राय और झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई भी उनसे मिले थे। महारानी लक्ष्मीबाई को उन्होने करुणगाथा

1. District Gazetteer of the United Provinces, Mathura Vol VII, Edited and compiled by D. L. Dvake Brockman I. C. S. (1911) ?

२. राजा महेन्द्र प्रताप अभिनन्दन ग्रन्थ "१९७६" पृ० ३७३, ३७५। मीरज़लाही

क्रमशः

को सुना जिसमें रानी पर अँग्रेजों द्वारा किये गये अत्याचारों का मार्मिक वर्णन था।[१] रानी द्वारा यह आशीर्वाद माँगने पर कि मैं वीरांगनाओं की भांति लड़ती-लड़ती स्वदेश पर बलिदान हो जाऊँ। इस पर स्वामी जी ने प्रसन्न होकर कहा था "देवी! यह शरीर क्षण भंगुर है और नाशवान है।[२] यह सदैव नहीं रह सकता। धन्य हैं वे व्यक्ति जो धर्म पर इसे न्योछावर कर देते हैं। वे मरते नहीं, अमर हो जाते हैं" इस प्रकार श्रीविरजानन्द के शिष्य स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आजादी का अलख जगाया।[३] मथुरा के उक्त दोनों महामानवों ने क्रान्ति के नेताओं को मातृभूमि को स्वतंत्रता के महान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रेरित किया था। क्रान्ति के विस्फोट होने के पूर्व मथुरा जनपद की भूमि पर तत्कालीन क्रान्तिकारी नेताओं का पदार्पण हुआ था और यहाँ के लोगों को क्रान्ति अथवा स्वतंत्रता संग्राम के लिए सन्नद्ध होने का आह्वान किया था।

क्रान्ति को जन समर्थन—१८५७ से सम्बन्धित पुराने कागजातों और

को उक्त आशय का विवरण का उल्लेख १२ अक्टूबर १९६९ को उर्दू 'मिलाप' जालन्धर तथा "आर्य मर्यादा" में प्रकाशित हुए थे।

३. वही; ३७३—३७५ ४. वही; ३७३—३७५ ५. वही; ३७३—३७५

६. ज्ञानी पिण्डीदास—१८५७ के स्वतंत्रता संग्राम स्वराज्य प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का क्रियात्मक योगदान। ७. वही

१. ज्ञानी पिण्डीदास—१८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में स्वराज्य प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का क्रियात्मक योगदान "आर्य प्रकाशन अमृतसर" उक्त लेख राजा महेन्द्र प्रताप अभिनन्दन ग्रन्थ में प्रकाशित हुआ। उसी से यह उद्धृत है—पृ०

२. वही; ३. वही;